पाठ्य सामग्री

Geography B.A. Part-II, (Hon's)

Paper-III

Unit-III

भारत में सूती वस्त्र उद्योग का वर्णन करें ?

Paper-III Group-III Unit

Gulam Haider ② D 786

Cotton Textile Industry of India

सूती कपड़े का उद्योग भारत का सबसे महत्वपूर्ण उद्योग है। भारत के सूती उद्योग के कारखानों में 12 लाख से भी अधिक मजदूर काम करते हैं। इसके अतिरिक्त लगभग एक करोड़ (10000000) बुनकर (जुलाहा) का जीवन निर्वाह इस उद्योग से होता है। संसार में सूती कपड़े के उत्पादन में भारत का तीसरा स्थान है। भारत में सूती उद्योग का विकास प्राचीन काल से ही हो रहा है। सर्वप्रथम कपास की खेती भारत में ही हुई थी। मोहन जोदड़ो एवं हड़प्पा की खोदाई से पता चलता है कि आज से 5000 वर्ष पूर्व भारत में उत्तम कपड़ा बुना जाता था। [illegible] सिन्धु सभ्यता में ही यह उद्योग चल रहा है। मुगलिया काल में भारतीय सूती वस्त्र उद्योग को गौरव प्राप्त था। यह उद्योग 18वीं शताब्दी तक [illegible] रहा, किन्तु यूरोप की औद्योगिक क्रान्ति ने इसको धक्का लगा। [illegible] युद्ध ने इस उद्योग को [illegible] दिया। भारत में रेलों का विस्तार तथा पूर्व-पश्चिम के बीच [illegible] मार्ग का खुलना भारत के इस उद्योग के लिए [illegible] था। आज यह उद्योग प्रगति पर है।

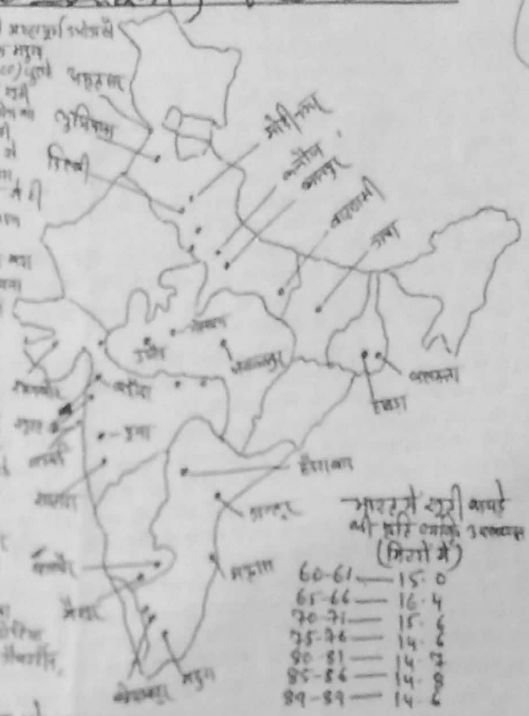

भारत वर्ष में सूती वस्त्र का आधुनिक कारखाना सन 1818 में कलकत्ता के हुगली नदी के किनारे खोला गया, परन्तु यह असफल रहा। इसके पश्चात 1851 में बम्बई में एक मिल खोला गया इसके पश्चात 1854 में [illegible] एक कारखाना खोला गया। इसके बाद 1861 तक 12 मील मिलों की स्थापना हुई। 1900 ई० तक यह संख्या 193 मिलें [illegible] [illegible] करते थे। सन 1905 में स्वदेशी आन्दोलन और सन 1914 में महायुद्ध [illegible] ने इस उद्योग को बड़ा प्रोत्साहन दिया। इस समय देश में 270 मिलें थीं।

भारतीय मिलों में [illegible], [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] आदि के [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] तथा से सूती [illegible] कपड़ा बनाया जाता है।

भारत में सूती कपड़े की प्रति व्यक्ति उपलब्धता (मीटरों में)

60-61	15.0
65-66	16.4
70-71	15.6
75-76	14.6
80-81	14.7
85-86	14.8
89-89	14.6

सूती वस्त्र उद्योग के स्थापना के कारक

कच्चे माल की प्राप्ति :→ कच्चे माल को किसी भी उद्योग का प्रथम माना जाता है। कच्चे माल की निकटता और प्रचुरता सभी [illegible] उद्योगों के लिए लाभ प्रद है। कपास इस उद्योग का कच्चा माल है। यह भार में हल्की होती है। [illegible] में स्थानीय होती है। अतः सूती वस्त्र उद्योग की स्थापना [illegible] उत्पादन क्षेत्र से दूर भी [illegible] कम खर्च में लाया जा सके।

श्रमिक :→ उद्योग संचालन में काफी संख्या में कुशल और सस्ते श्रमिकों की आवश्यकता होती है। अतः सूती वस्त्र उद्योग में [illegible] कताई, बुनाई, छपाई, रंगाई एवं [illegible] में काफी संख्या में कुशल श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती है।

जलवायु :→ इस उद्योग में जलवायु का विशेष योगदान होता है। शुष्क एवं गर्म जलवायु में धागा अधिक टूटते हैं और नम जलवायु में कम। इसके लिए उपयुक्त जलवायु समुद्र तटीय भाग में मिलता है। जहाँ जलवायु अनुकूल नहीं होती वहाँ कृत्रिम ढंग से [illegible] जाती है।

जल :→ सूती वस्त्र उद्योग में धुलाई एवं रंगने की कुटाई में काफी स्वच्छ जल की जरूरत होती है। अतः जल की आपूर्ति भी उपलब्ध होना है। इसकी भी ध्यान रखना पड़ता है।

पूंजी :→ उद्योग की स्थापना का एक प्रमुख [illegible] आधार पूंजी है। हम तो कहते कि पूंजी के अभाव में उद्योगों की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। [illegible] उद्योगों की स्थापना में स्थानीय [illegible] भी इसी उद्देश्य [illegible] है।

यातायात के साधन :→ कारखाने तक कच्चा माल लाने और कारखानों से तैयार माल बाजार भेजने की सुविधा तभी हो सकती है जब [illegible] यातायात के उत्तम साधन की व्यवस्था हो।

बाजार :→ किसी भी उद्योग की सफलता और प्रगति उसके तैयार माल की खपत पर आधारित होता है। तैयार माल की खपत के लिए विस्तृत बाजार का होना आवश्यक है। बाजार भी उद्योग के निकट होने से अधिक लाभ प्राप्त होता है। बाजार जितना ही दूर होगा तैयार माल का मूल्य भी उतना ही अधिक होगा, क्योंकि परिवहन खर्च इसी के अनुसार बढ़ता है। यदि तैयार माल की [illegible] अधिक होती बाजार दूर भी हो सकता है।

तकनीकी ज्ञान :→ उद्योग की प्रगति और ~~[illegible]~~ उत्पादन की परिमाण तकनीकी ज्ञान पर आधारित है। जिस देश के लोगों में जितना अधिक तकनीकी ज्ञान होता है, वहाँ का उद्योग भी उतना ही प्रगति करता है। जापान, U.S.A, जर्मनी आदि ऐसे राष्ट्र हैं।

भूमि :→ उद्योग की स्थापना में भूमि भी एक महत्वपूर्ण कारक है। भूमि से सम्बन्धित कई महत्वपूर्ण कारक हैं। इस उद्योग के लिए भूमि सस्ती हो ताकि कारखाने दिये जा सके। कारखाने के निकट काफी भूमि हो जिससे उद्योग का विकास, श्रमिकों के निवास आदि की व्यवस्था हो सके।

राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा :→ उद्योग की स्थापना एवं प्रगति शान्त वातावरण में ही हो सकती है। साथ ही, उद्योग की सुरक्षा का भार भी राष्ट्र पर होना अनिवार्य है। अशान्त वातावरण में कोई भी व्यक्ति कार्य करने में असमर्थ होता है तथा [illegible] असुरक्षित जगह पर रहना भी नहीं चाहता। अतः शान्ति व्यवस्था आवश्यक है।

शक्ति के साधन :→

Distribution

1. महाराष्ट्र :→ सूती कपड़ा उद्योग की, उत्पादन की दृष्टि से यह राज्य सर्व प्रथम है। भारत में सूती वस्त्र उद्योग का कारखाना प्रथम यहीं ही खोला गया। यहाँ सूती मिलों की संख्या 112 है। यह राज्य भारत का 36% वस्त्र तैयार करता है। केवल मात्रा में ही नहीं बल्कि किस्म में भी उत्तम प्रकार का कपड़ा तैयार करता है। केवल बम्बई नगर में ही 65 तथा शोलापुर में 11 कारखाने हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ सूती उद्योग पूना, सतारा, नागपुर, वर्धा, अमरावती, लुधियाना, हिंगनघाट, मोर, अकोला, कोल्हापुर, हुगली, जलगाँव, चालीस गाँव आदि हैं। यहाँ बम्बई में ही सबसे पहले सूती वस्त्र उद्योग के कारखाने खुले इस उद्योग को उन्नति के निम्न लिखित कारण हैं।→ . . . .

(1) भारत में सूती वस्त्र उद्योग सर्व प्रथम बम्बई में ही स्थापित हुआ। यहाँ इस उद्योग को पर्याप्त सफलता मिली अतः यहीं पर ही सूतीवस्त्र उद्योग खोलने के लिए लोग इच्छुक हो गये।

(2) U.S.A. गृह युद्ध के कारण कपास के व्यापार से और बहुत सा धन मिल गया। यहाँ पूंजी पतियों की पहले से ही कमी न थी।

(3) बम्बई पतन पर इंग्लैंड तथा यूरोप से मशीनों आदि का आयात किया जा सकता है।

(4) बम्बई बहुत बड़ा व्यापारिक केन्द्र है। इस लिए यहाँ पर रुपये के लेन देन के लिए बैंक तथा विदेशी कम्पनीयों के अनेक कार्यालय हैं।

(5) यह राज्य समुद्र के निकट स्थित है, जिसके परिणाम स्वरूप इसकी जलवायु नर्म तथा आर्द्र है, ऐसी जलवायु के कारण मिलों के अन्दर कृतिम आर्द्र वायुमंडल बनाने की आवश्यकता नहीं होती यहाँ की प्राकृतिक आर्द्र ही तागों को टूटने से बचाने के लिए पर्याप्त होती है।

(6) इस राज्य को कच्चे माल की सुविधा प्राप्त है, क्योंकि यह राज्य सबसे विशाल कपास उत्पादक राज्य है। केवल देश के आन्तरिक भागों से ही सुविधा पूर्वक कच्चे माल के रूप में कपास नहीं मिल जाती है, बल्कि U.S.A, मिस्र, पाकिस्तान आदि देशों से उत्तम प्रकार की लम्बे रेशे वाली कपास प्राप्त की जाती है।

(7) यह सघन आबादी वाला राज्य है। अतः यहाँ कुशल एवं सस्ते श्रमिक मिल जाते हैं।

(8) यहाँ शक्ति के रूप में जल शक्ति का प्रयोग किया जाता है। यह शक्ति खोपाली, भीरा तथा शिवपुरी आदि शक्ति गृहों से प्राप्त की जाती है।

(9) यहाँ परिवहन के सभी सुविधा उपलब्ध है। विश्व के सभी समुद्र देशों से जुड़ा है। रेलों और सड़कों का जाल बिछा है।

(10) इस राज्य की साहसी व्यापारियों तथा उद्योग पतियों की कमी नहीं है, जिनको व्यापार तथा उद्योग का पर्याप्त अनुभव है।

राज्य	मिलों की संख्या
तमिलनाडु	208
गुजरात	120
महाराष्ट्र	112
पं० बंगाल	45
उत्तर प्रदेश	36
आन्ध्र प्रदेश	32
कर्नाटक	29
केरल	27
मध्य प्रदेश	23
राजस्थान	20
पंजाब	12
हरियाणा	14
बिहार	7
दिल्ली	6
उड़ीसा	4
असम	2
पाण्डेचेरी	5
गोआ	1
	703

2. गुजरात :→ सूती कपड़ा उद्योग की दृष्टि से इस राज्य को द्वितीय स्थान प्राप्त है। यह राज्य भारत का 30% वस्त्र तैयार करता है। यहाँ मिलों की संख्या 120 है। सिर्फ अहमदाबाद में 72 कारखाने हैं, जो इस राज्य का प्रमुख केन्द्र है। यहाँ सूती वस्त्र उद्योग के लिए भौगोलिक और आर्थिक सुविधाएं प्राप्त हैं। इस राज्य में अहमदाबाद के अलावे सूरत, पोरबंदर, बड़ौदा, भावनगर, भड़ौंच, राजकोट, नड़ियाद, नवसारी, मोरवी आदि हैं। यहाँ सूती कपड़े का उद्योग 1851 में प्रारम्भ हुआ।

3. तमिलनाडु :→ सूती वस्त्र की दृष्टि से तमिलनाडु का स्थान भारत में तीसरा है। यहाँ सूती मिलों की संख्या 208 है। यहाँ कोयम्बटूर में सूती वस्त्र के 40 कारखाने हैं। इसके अलावे मद्रास, मदुरै, टूटीकोरिन, तिरुचिरापल्ली, रामनाथपुरम, कामीपुरम, शोलम, तंजोर, एलौरा, पाण्डेचेरी, सिंगानालूर आदि हैं। यहाँ इस उद्योग के लिए जल विद्युत शक्ति प्राप्त है। यहाँ के अधिकांश कारखाने विदेशी कपास का ही उपयोग करते हैं। क्योंकि राज्य में कपास का उत्पादन बहुत कम है।

4. पं० बंगाल :→ इस राज्य की सूती उद्योग की मिलें हुगली नदी के दोनों ओर स्थित हैं। प्रायः अधिकांश मिलें सीरीपुर, पानीहाटी, सिराम पुर रिसरा क्षेत्र में ही केन्द्रीत हैं। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य क्षेत्र भी हैं जहां एक या दो मिलें पायी जाती हैं। इस प्रकार यह देखा जाय तो केवल 48 K.m की परिधि के अन्दर लगभग 45 मिलें स्थित हैं। इनमें से 14 मिलें हावड़ा में तथा 10 सिरामपुर में हैं।

5. उत्तर प्रदेश :→ कपड़ा उत्पादक राज्यों में इसका स्थान चौथा है। यहाँ मिलों की संख्या 36 है। यहाँ अकेले कानपुर में 14 कारखाने हैं। इसके अलावे मुरादाबाद, मोदीनगर, बरेली, हाथरस, इटावा, रामपुर, अलीगढ़, आगरा, वाराणसी, गोरखपुर, लखनऊ आदि हैं।

6. आन्ध्र प्रदेश :→ यहाँ सूती वस्त्र के 32 कारखाने हैं। यहाँ सूती वस्त्र के कारखाने हैदराबाद, वारंगल, सिकन्दराबाद, गोड़पल्ली, पूर्वी गोदावरी, गुंटूर, काकीनाडा आदि हैं।

7. कर्नाटक :→ यहाँ मिलों संख्या 29 है। यहाँ का प्रमुख केन्द्र बंगलौर, बेलगाँव, मैसूर, बल्लारी, देवनगरी, गुलबर्गा, चीकलपुर्गी, गदग सिटी आदि हैं।

8. केरल :→ यहाँ सूती मिलों की संख्या 27 है। यहाँ के प्रमुख केन्द्र त्रिवेन्द्रम, क्विलोन, ~~अल~~ अलाप्पाजगर, कानानोर, अलप्पी, पापिनी सेरी, कालीकट, त्रिचूर आदि हैं।

9. मं० प्रदेश :→ यहाँ सूती वस्त्र के 24 कारखाने हैं। यहाँ का प्रमुख केन्द्र इन्दौर, ~~उदयपुर~~, भोपाल, उज्जैन, ग्वालियर, देवास, रतलाम, बुरहानपुर, सतना, मुलगाँव आदि हैं।

10. राजस्थान :→ यहाँ सूती मिलों की संख्या 20 है। यहाँ प्रमुख केन्द्र जयपुर, उदयपुर, कोटा, भिलवाड़ा, भवानी, विजयनगर, अजमेर, श्रीनगर, आदि।

सूती धागे का उत्पादन (10 लाख K.g में)

वर्ष	उत्पादन
86-87	1302.0
87-88	1331.5
88-89	1302.1
89-90	1367.5
90-91	1467.5

विश्व-व्यापार

भारत गर्म देश होने के कारण सूती वस्त्र की बहुत अधिक माँग है। भारत अबसे लगभग 60 वर्ष पहले काफी सूती वस्त्र विदेशों से आयात करता था, किन्तु थोड़ा आयात किया जाता है, लेकिन अब भारत बहुत अधिक सूती वस्त्र विदेशों को निर्यात करता है। यह सूती वस्त्र मलाया, बर्मा, मिस्र, अदन, सूडान, कीनिया, श्रीलंका, पाकिस्तान आदि देशों का निर्यात करता है। 1980 में मिल द्वारा बने कपड़ों के निर्यात द्वारा 139 करोड़ रुपये की पूंजी प्राप्त की गयी तथा 745 करोड़ रुपये की पोशाकें निर्यात की गयी।

सूती वस्त्र का उत्पादन (करोड़ मीटर में)

वर्ष	उत्पादन
1950-51	421
1960-61	674
1970-71	736
1980-81	995
1982-83	1098
1983-84	1268
1984-85	1297
1985-86	1330